अंतरा-शब्दशक्ति

ओस का आँसू

लघुकथा संग्रह

नमिता दुबे

ओस का आँसू

(काव्य संग्रह)

नमिता दुबे

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-19-2

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- नमिता दुबे

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Oss ka Ansu by Namita Dubey

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आत्मकथ्य

मेरे परिवार में किसी को भी साहित्य में रूची नहीं थी। पर मैग्जीन बहुत आतीं थी। हम बच्चे थे हमारे लिये चंपक, चंदामामा, नंदन लोटपोट और अन्य कॉमिक्स भी आती थीं। धीरे धीरे पढ़ना आदत में आता गया। बड़े हुये तो बडों की मैग्जीनस पढ़नें लगे। गृहशोभा, गृहलक्ष्मी, मनोरमा, सरिता, वनिता, मेरी सहेली, फेमिना इत्यादि पढ़नें लगे। इधर पढ़ाई भी बढ़ गई और पढ़नें में रूची भी। उपन्यास पढ़नें शुरू किये। 12वीं में मेडिकल का एग्जाम दिया सलेक्शन नहीं हुआ। ट्रेक चेंज कर बी.ए. फिर एम. ए. किया फिर डीबीएम किया। जॉब लग गई। शाम को अपनी फ्रेन्ड के साथ एल.एल.वी. ज्वाईन कर लिया। न लिखना न पढ़ना कोई टाईम नहीं। कभी कभार कुछ लिखा और भेजा तो छप गया पैसा मिला। मधुरिमा में मेरी काफी रचनायें छपी हैं पर जॉब के साथ कानून की पढाई धीरे-धीरे शौक पीछे छूट गये।

इसी दौरान मेरी सगाई हुई और पांच फरबरी को शादी हो गई। प्रथम वर्ष क्लीयर हो गया। द्वितीय वर्ष की पढाई कर ली पर 22 अप्रेल को पहला पेपर था। मुझे लेबरपेन स्टार्ट हो गये। कॉलेज से हॉस्पिटल पहुंचनें में टाईम लगा। जुड़वा बच्चे थे केस बिगड़ गया। बेटी को मुश्किल से बचाया गया। बेटा एक्सपायर हो गया। जिन्दगीं ने बड़ी अजीब

परीक्षा ली। धीरे-धीरे बेटी बड़ी हुई। दूसरी बेटी आई। परिवार में ही मजा आने लगा। वैसे भी साउथ में बिल्कुल अकेले थे हम लोग।

बच्चे बड़े हो गये,.. अब बच्चों के कहनें से फिर लिखना शुरू किया। पढ़ती तो रहती थी लिखनें का ख्याल नहीं आया। बड़ी बेटी मेरा लिखा जमा करती थी। एक दिन उसनें कादम्बिनी क्लब ज्वाईन करवा दिया। क से कविता भी गये। विभिन्न ग्रुप में शामिल हुये। और अब आपके सामनें हूं। एक साल हो गया लिखते हुये।

अन्तरा-शब्दशक्ति द्वारा प्रकाशित मेरा यह लघुकथा संग्रह "ओस के आँसू" पाठकों को समर्पित है। आप सभी की प्रतिक्रियाओं और समीक्षा की प्रतीक्षा रहेगी।

साभार
नमिता दुबे

अनुक्रमणिका

1. ओस के आँसू 7
2. अपनों का वार 8
3. असलियत 9
4. माँ का दिल 10
5. असंतोष 11
6. होलिका दहन 12
7. गलती 13
8. धंधा 14
9. करवाचौथ 14
10. देश के दुशमन 15
11. ड्रामा 16
12. जीवन संध्या 17
13. परमिशन 18
14. कांच का मान 19
15. साहस 21
16. जागतीं आँखों के सपने 22
17. उद्दंडता 23
18. महत्व 24

19. पुरानी हवेली 25
20. नवरात्री 26
21. अप्रत्याशित 27
22. चुनौती 28
23. बदला 29
24. अफ़सोस 30
25. बजरा 31
26. ई सी जी 32

ओस के आँसू

सुबह-सुबह बिखरी ओस पर नंगे पांव चलना दिवा को हमेशा से बहुत पसन्द था। घर के सामनें फैला लम्बा सा लॉन, जिसे बडी मेहनत से माँ ने माली काका के संग मिल कर संवारा था।

सुबह-सुबह गर्मियों में साढे पांच बजे और सर्दियो में साढे सात बजे पापा के साथ, सभी भाई-बहन लॉन में भागते-दौडते, धमाल मचाते और नाश्ता ले कर मम्मी हाजिर। फिर नहाना-धोना स्कूल जाना। शाम को वापस आ कर खेलना-पढना।

सब कुछ बहुत ही खूबसूरत था। एक दिन अचानक कयामत आ गई। मम्मी-पापा, भाई और छोटी बहन कार से घर लौट रहे थे, अचानक एक मोड़ पर गाडी दुर्घटनाग्रस्त हो खाई में गिर गई।सब खत्म हो गया।

दिवा अकेली ये सब सहने को बच गई। रिश्तेदारो की भीड, पर कोई अपना नहीं।

बारहवी पास दिवा नें परिस्थति के आगे हार ना मान उनसे लडने की ठानी।

कॉलेज में दाखिला लिया और ट्यूशन पढाने लगी। वो भी केवल व्यस्त रहने के लिये। पैसे की कोई कमी नहीं थी। बी.ए, एम.ए कर सोसल रिलेशन में पी.एच.डी कर ली। अब डाक्टर दिवा कॉलेज में प्रोफेसर बन गई।

एक सहेली की शादी में दिव्य से मुलाकात हुई और जल्दी ही उन्होने विवाह कर लिया।

अरसे बाद कुछ खुशियों नें दस्तक दी थी। वर्ष बीतते वो माँ भी बन गई। दीपक। यही नाम रखा था बेटे का। ग्रहण पीछा ही नहीं छोड़ रहा था। दिव्य कोई डील करने के लिये विदेश गये तो कभी वापस नहीं आये।

दीपक अब केवल दिवा की जिम्मेदारी ही नहीं बल्कि जीवन की एक मात्र आशा बन गया था।दीपक का सिविल सर्विस में सलेक्शन हो गया

और अपनी पसन्द की लडकी से उसका विवाह भी हो गया। घर पोते-पोती की किलकारी से आबाद था और डाक्टर दिवा अकसर सुबह जाग कर घास के लॉन में आ बैठतीं।

पुरानी यादों की पोटली उठाये। नित नई यादों का सिलसिला जारी रहता। “दादी-दादी, चलो मेरे साथ घास पर दौड़ो” या “मुझे पकड़ो दादी!” कह कर नन्हा कियान घास पर दौडने लगाता।

पीछे भागती दिवा को लगाता, वो बच्ची है और भाग रही है। पापा पीछे से उसे पकडने दौड रहे है। चारो तरफ बिखरी ओस दिवा के अशक्त देह पर आँसू सी चिपक जाती।

अपनों का वार

दुश्मन अगर बाहर से हमला करे तो बचाव किया जा सकता है पर दोस्त पीठ पीछे वार करे तो कैसे बचे? राज की पोस्टिंग पहली बार घर से इतने दूर बर्फ के पहाड़ों पर हुई थी। वो बहुत खुश था।

एक रात अचानक आतंकवादियों का हमला हुआ।सभी साथी वीरता से लड़े। कुछ आतंकवादी मारे गये कुछ पकड़े गये। पकड़े गये आतकवादियों पर कुछ किलो सोना था। नियत अपनों की बिगड़ गई। जोश-जोश में राज ने उनका साथ नहीं दिया और उसे अभियुक्त बना दिया गया। ऊपर से नीचे तक सभी मिले हुये थे।

वो देशभक्ति के जुर्म में अपने जीवन के 15 वर्ष बर्बाद करके कोर्ट द्वारा अभी निर्दोष करार दिया गया है।क्या कोई उसके जीवन के बर्बाद वर्षो को वापस लौटा सकता हैऔर वो अपमान जो उसे गद्दार न होने की कीमत में झेलना पड़ा? कौन चुकायेगा हिसाब???

असलियत

“किसने कहा?"

"सभी जानते है वो कैसे चरित्र का मालिक है।"

"हा, सुनी हुई बातें है! सच किसने देखा है?"

"तू ...तू उस बेगैरत की तरफदारी कर रही है, जिसनें अससंख्य औरतों का जीवन बर्बाद किया?!"

"चल रहने दे,कोई फायदा नहीं इन सुनी-सुनाई बातों में।"

आगे से दायीं तरफ मुडने पर पुनीता का घर था।तेज कदमें से वो घर की तरफ जा रही थी। सडक की बिजली भी गुल थी। अचानक ठोकर लगी और वो सर के बल गिर गई।

होश आया तो वही अंकल सामने थे जिनके बारे में पता नहीं क्या-क्या मोहल्ले वाले कहते है। डर से हालत खराब हो गई पर तुरन्त सम्हल कर पूछा, “अंकल आप? मैं यहां?”

सर पर हाथ फिरा बोले, "बिटिया, आप बेहोश हो गये थे। मैं वहां से निकल रहा था। डाक्टर के पास ले आया।घर का पता बताओ छोड देता हूं,डॉक्टर डिसचार्ज करने ती बोल रहे है।”

पुनिता आवाक उन्हें देख रही थी फिर बोली, “अंकल मैं चली जाऊंगी।”

“नहीं बिटिया, सर पर चोट आयी है ऐसी हालत में कैसे अकेले जाओगी? मैं तुम्हें घर पहुंचा देता हूँ।”

ड्राइवर के साथ वे उसे घर छोड़ गये पर अन्दर नहीं गये और डाक्टर का पैसा भी नहीं लिया। “बेटा, कभी-कभी मिलने आ जाया करो पापा को ले कर। मेरे बच्चे विदेश में है। बेटी बडी है, बेटा छोटा। वहीं के नागरिक बन गये।” झिलमिलाते आँसू पुनिता से छुप ना सके।

वो दौड़ कर उनके गले लग गई। वात्सल्य से उनका हाथ उसके सर को सहला रहा था। मन में बहुत सी बातें आ जा रही थी। ‘सच ये था या सुना हुआ।’

माँ का दिल

"हम कहां जायेंगे बेटा?! ये छोटा सा घर ही तो हमारा सब कुछ है। सर छुपाने का आसरा। किराये के एक कमरे और पेन्शन से दवाई और खाने का खर्चा ही बडी मुश्किल से चलता है। अगर तुम इसे भी बेच दोगे तो हम जियेंगे कैसे? ना मालुम भगवान ने कितनी उम्र लिखी हो।"

किसी भी बात का असर देवा पर नहीं हुआ। वो तो जैसे ठान कर आया था। बोला, "पापा क्यों चिन्ता करते हो आप? चाचा के पास चले जाओ। जब तक कोई और इन्तजाम नहीं होता तब तक वहीं रहो।" फैसला सुना देवा चला गया।

रिटायर्ड चपरासी सुखराम जी मात्र पन्द्रहवाँ साल पूरा करते ही इस नौकरी में आ गये थे। पिता की असामायिक मौत से परिवार पर आर्थिक संकट आ गया। रिश्तेदार, परिवार वालों ने पहले ही रास्ते अलग कर लिये। मां दो बेटे और एक बेटी के साथ नितांत असाह परिस्थिति से गुजर रहीं थीं।

नौवी क्लास में सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले सुखराम ने पढाई छोड़ने का निर्णय लिया और परिवार की ढाल बन गये। समय के साथ ये छोटा सा घर खड़ा किया। भाई-बहन को पढाया और उनकी शादी भी करवा दी। मां ने जिद्द करके सुखराम की शादी भी कर दी।

एक बेटा देवा, दादी का लाड़ला। जो चाहता करता।परिणाम वो स्वार्थी बनता गया। एम.बी.ए कर के बहुत अच्छी नौकरी कर रहा है। खुद की पसन्द से शादी कर ली। सब कुछ सही चल रहा था कि अचानक अपार्टमेंट कल्चर ने सब बदल दिया। उनके घर के पास वाली जमीन किसी बड़े बिल्डर ने खरीदी थी और उनके घर की कीमत भी अच्छी लगाई। लेकिन सुखराम उसे बेचना नहीं चाहते थे, मना कर दिया।

पर मखमल में टाट का पेबन्द, इतने अलीशान एरिया में उनका छोटा सा घर बड़ा अटपटा लगने लगा। देवा ने उस घर के बदले में अपनी पत्नी के नाम दो फ्लोर में सौदा तय कर लिया। इतने अच्छे इलाके में तीन बेड़रूम घर के दो फ्लोर!

कोई रास्ता ना देख सुखराम और उनकी पत्नी ने थोड़ा सामान लिया और भाई के घर जा पहुंचे। भाई ने अपने बड़े भाई का स्वागत बहुत दिल से किया। वो उनके संघर्ष का साक्षी था। देवा की हरकत पर गुस्सा भी बहुत आ रहा था पर मालती देवी ने अपने मुंह से देवा के लिए एक शब्द भी नहीं कहा, आखिर मां का दिल है। नालायक बेटे को भी बद्दुआ नहीं दे सका।

असंतोष

बंगाल के एक छोटे से गांव से आई रिति पहले-पहल दिल्ली में बहुत घबराती थी। उसे तो हिन्दी भी ठीक से नहीं आती थी। जब मेरे पास काम मांगने आई तो लजाई, संकुचाई सी नवयौवना थी।

मेरे घर काम के दौरान वो काफी कुछ सीखी पर हमेशा अपने गाँव की बातें बताती रहती। एक दिन बोली भारी मन से बोली, “मैं वापस जाना चाहती हूं पर पति नहीं चाहते!”

आज उसका पति उसके किये काम का पैसा लेने आया तब पता चला की वो भाग गई।

कहां, कोई वहीं जानता? अपने गाँव या ....जाने किन सपनों का बोझ उसे परेशान किये था।

होलिका दहन

होलिका की लपटें बहुत ऊंची थी।बिल्कुल आकाश छूते हुये।जलती होली की प्रदक्षिणा करते लोग पूजा-पाठ कर स्वयं के लिये और अपने परिवार के लिये स्वस्थ जीवन की कामनायें कर रहे थे।होलिका की अग्नि कम हुई तो गुलाल लगा कर, गले मिल, मिठाई खाने-खिलाने का दौर चलने लगा। तेज आवाज में बजते गानें, शराब, सब मस्ती में झूम रहे थे पर चौखट पर खड़ी रमा को जैसे पूरे बदन में कांटे चुभ रहे थे।

आज वो बीकॉम फाईनल की छात्रा है।दो साल पहले वो प्रथम वर्ष की छात्रा थी।वो और उसकी अभिन्न सहेली श्यामा। नाम और काम सब एक जैसे।एक दूसरे पर जान छिड़कतीं थी।कोई काम एकमदूसरे के बिना नहीं करतीं थीं।पढाई के साथ-साथ घर के काम जैसे खाना सिलाई, बुऩाई सभी कर्यो में नम्बर एक।

पिछली होली परीक्षा के बीच ही आई थी। दूसरे दिन ही पेपर था पर होली भी लुभाती है। मौज मस्ती, सभी का नाच गाना मिलना-जुलना।होलिका दहन से पहले श्यामा उसी के पास आ गई।दोनों ने मिल कर होलिका की पूजा की। गुलाल-अबीर संग सबको रंग लगाया और मिठाई खाने लगीं। मिठाई तो सभी घरों से आई थी।

‘ये क्या सर क्यों घूम रहा है।’ रमा भाग कर मां के पास गई और लुढ़क गई।दूसरे दिन जब जागी तो रंगों की चहल पहल चरम पर थी। सभी ने रंग लगाया पर श्यामा कुछ पता नहीं था। अब तक या तो उसे आ जाना था या फिर रमा को बुलवा लेना था। वो श्यामा के पहुंची।

“चाची कहां है श्यामा ?”

“अरे बिटिया कल रात से तुम्हारे घर ही तो है।काहे मजाक करती हो?” चाची ने मुस्कुराते हुए पूछा।

“मेरे घर? नहीं तो चाची!कल मिठाई खा कर मुझे चक्तर आया। मैं तो अभी जागी हूं।”

हतप्रत सी रमा श्यामा को ढूढंने लगी। छोटा कस्बा समाचार तुरन्त फैला।सब मिल श्यामा को ढूंढनें लगे। फैक्टरी के पास के खन्ड़रों में वो सोती मिली। अस्त-व्यस्त कपड़ो में।

मेडिकल जांच में सामूहिक बलात्कार की पुष्टी हो गई। सन्नाटा छा गया। कौन, क्या, किसी को कुछ नहीं मालुम।

सबने समझाया पर श्यामा जो एक बार मौन हुई तो फिर ना बोली। परिक्षायें भी नहीं लिखीं। एक दिन अकेले में फांसी लगा ली। सारी चर्चाओ को विराम मिल गया पर गुनाहगार कौन पता ना चला।

होलिका की अग्नि ना जाने कितनी यादें ताजा कर देती है। वो होली कैसे भुलाई जा सकती है !

गलती

छोटा सा कमरा। उसमें रहने वाले पांच लोग। ना कोई एकांत, ना बात चीत का स्थान।

नई नवेली दुल्हन प्राची को विवाह के पहले ये एहसास तक नहीं था कि वो जिसके लिये सभी को ठुकरा कर आई है वो है क्या और उसकी सामाजिक हैसियत क्या है।

थोडे दिन में ही वो ऊब गईऔर जितेश पर बाहर कमरा लेने के लिये दवाब बनाने लगी पर निम्म मध्यम वर्ग में ऐसे फैसले भी आसान कहां होते है?

रोज का तनाव बढता गया। नौबत मार-पीट तक आ गई।

कहाँ जाती सबको छोड कर प्यार की दुनियाँ बसाने आई थी?

एक दिन पंखे ले लटक अपनी दुनियाँ खतम कर ली। पत्र माता-पिता के पास पहुंचा तब तक वो राख बन चुकी थी।

धंधा

रोज-रोज रैलियां, भाषणबाजी और गाली गलौच।चुनावी माहौल में ये आम बात है।

सुक्कू की बन आई।

कभी किसी पार्टी का बैनर पकड़ लिया, कभी किसी का झंडा उठा लिया। रोज पांच सौ मिल जाते है। खाना और दारू अलग से।बाद में तो ये नासमिटे पूछते भी नहीं है।

अब सुक्कू नें अपने जैसे लोगो को शामिल कर सौ लोगो का गैंग बना लिया और पार्टी वालो से मोलभाव करने लगा।

भीड के लालच में पार्टी वालो से उसे अच्छा पैसा मिलने लगा। वो अपने जैसों का नेता बन गया। धंधा चल निकला।हमारे देश में जो कभी मन्दा नहीं पडता।

करवाचौथ

'आज करवाचौथ पर पूरा एक साल पूरा हो जायेगा।'

सन्दीप जब से नौकरी पर गया है वर्ष भर से नहीं आ पाया।

पिछले वर्ष करवाचौथ पर कितने उत्साह से उसने व्रत किया था। सन्दीप ने उसका बहुत ख्याल रखा था। फिर चाँद की पूजा कर व्रत खोला था।

आज करवाचौथ है और सन्दीप की कोई खोज खबर नहीं। पूरा दिन अन्यमनस्कता में गुजरा। घर में पूजा कर शिवानी छत पर चाँद की पूजा करने चली गई। चाँद दिखा पूजा ख़तम भी नहीं हुई थी कि एक आहट सुन वो चौंक गई, पीछे मुड़ी।

"पानी पियो बेगम साहिबा।" सामने सन्दीप हाथ में लोटा लिये मुस्कुरा रहा था। खुशी से चीखती शिवानी उसकी बांहों में झूल गई। पत्नी के प्यार में मात्र कुछ घन्टों की अनुमति ले बस व्रत खुलवाने वो आया था।

देश के दुशमन

गहन अन्धेरा था। सर्दी के दिन। जंगल के बीचो-बीच बने गेस्टहाउस में बड़ी हलचल थी। बहुत प्रकार के पकवान आये थे और भी कई इन्तजाम थे।

तभी सन्नाटे को चीरती अलीशान कार आ कर रूकी। उसके रूकते ही अन्दर से लोग बाहर आ गये और स्वागत-सतकार करने लगे। आने वाले सज्जन एक बड़े नेता थे पर जिनसे मिलने वे इस अन्धेंरे में आये थे वो लोग कोई सज्जन तो नहीं थे।

दिन भर देशभक्त का रोल अदा करने वाले नेता जी के सुर ताल सब बदले-बदले थे। पैसों से भरा सूटकेस कार में रखवा कर, ऐश कर के वो चलने का उपक्रम करने लगे।

वहां मौजुद चार लोगों ने अपने कपड़े बदले और वे सेना की वर्दी में सेना के जवान नजर आने लगे। उन्हें कार में बैठा, सेना के कैम्पस में दाखिल हो, आगे उन्हें उतार वो नेता जी चले गये।

जाना-माना चेहरा होने से ज्यादा पूछताछ भी नहीं हुई। उनका काम केवल इतना ही था। इसी के लिये उन्हें बडी़ रकम मिली थी।

दूसरे दिन सभी अखबार इसी खबर से भरे थे 'सेना के कैमेप में घुस कर आतंकवादियों ने हमला किया। सेना के 15 जवान शहीद।

ड्रामा

“एक साल पहले ही तो उनकी शादी हुई थी और आज तलाक की अर्जी। क्या हो गया है इस नई पीढी को। ना लाज, ना शर्म, ना लिहाज।” बडबडाती हुई दादी अपने कमरे में आ कर बैठ गईं।

“कितनी प्यारी नवबहू थी एकदम गुडिया सी। वो भी इंजीनियर। बडी कम्पनी में, बडी नौकरी करने वाली। सब खुश थे हुआ क्या ? क़्यों वो दोनों मिल कर नहीं रह सकते?”

पारिवारिक कोर्ट में आपसी सहमति से विवाह विच्छेद हो गया। घर में पार्टी रखी गई।कोई अच्छा बोल रहा था तो कोई बुरा पर ये सब एक तरफा था।

दादी की निगाह में अपने नाती और उसकी विदेशी गर्लफ्रेंड की चुहल बस गई और कुछ समय बाद दोनों नें कोर्टमैरिज कर ली।

वैसे कोई मानता नहीं ! लेकिन एक डाइवोर्स होने के बाद अगर उसका घर एक बार फिर बस जाये, यही सोच कोई कुछ कह नहीं पाया।समझ तो सब ही गए।

“बस ड्रामा” दादी अब भी बडबाये जा रही थी।”यही करना था तो पहले ही कर लेता, बेमतलब ड्रामे के लिए पहली शादी की ही क्यों?”

जीवन संध्या

"अरे तैयार नहीं हुईं? हम वैसे ही लेट हो चुके है।जल्दी करो...." कह कर राजीव पेपर के पन्ने पलटने लगे। सुलेखा, राजीव की पत्नी, बस गुस्से में उन्हें घूर कर रह गयीं। पहले उसने दिया को तैयार किया, फिर दीपक को तैयार कर के उनके पास छोड़ दिया। अब वो खुद तैयार हो रही थी। साथ-साथ बडबडाना चालू था। "जरा सी मदद नहीं करते,दो छोटे बच्चों को सम्हालना कितना मुश्किल होता है, उन्हें क्या पता?"

खैर वो लोग देर से ही सही पर राजीव के बॉस के बेटे की बर्थ डे पार्टी में पहुंच गये। राजीव तो अपने दोस्तों की महफिल में बैठ सुरा का आनन्द लेने लगा पर सुलेखा को दिया और दीपक ने बहुत परेशान किया। वो तो खैर बच्चे है पर राजीव को तो सोचना था। वो लोग रात 12 बजे घर आये। बच्चे तो गाडी में ही सो गये थे। बस कपडें बदलवा कर उन्हें सुला दिया।

ये एक दिन की बात नहीं है, हर दूसरे दिन ऐसी कोई ना कोई पार्टी होती रहती थी। परेशान सुलेखा ने उनमें जाना ही बन्द कर दिया। राजीव अकेला ही चला जाता!

समय बीतता गया, दोनों बच्चे जवान हो गए। दीपक मलटीनेशनल कंपनी में जॉब करने लगा और दिया पायलट बन गई। दोनों बच्चे ज्यादातर घर से बाहर रहते थे। दिया ने अपने साथी दर्वेश को जीवन साथी के रूप में चुना तो राजीव ने बढ़ी धूमधाम से उसकी शादी कर दी। शादी के बाद दिया आस्ट्रेलिया सेटल हो गयी और कुछ वक्त बाद दीपक अमेरिका चला गया। उसने वहीं शादी कर ली।बच्चे अपनी जिन्दगी की उधेड़बुन में उलझ गये और राजीव-सुलेखा अकेले हो गये।

उमर भी बढ़ गयीं.... पर यही तो होता है। अकसर वे ये बाते करते थे।

एक दिन एक समारोह में संजय से मुलाकात हुयी, जो एक चैरिटी संस्था चलाता था। राजीव और सुलेखा ने उससे जुड़ने का फैसला किया और दूसरे दिन

सुबह जा पहुंचे संजय के ऑफिस। संजय ने सारे ऑपचारिक रजिस्ट्रेशन करवाये और उनहें वहां ले गया जहां प्रोग्राम चल रहे थे। अनेक सामाजिक गतिविधियां।

अपने मुताबिक काम चुन लेने के बाद दोनों ने अगले दिन से आने का निश्चय किया। रात को इसी विषय पर बात करते हुयें दोनों बहुत उत्साहित थे। फोन पर बच्चों को बताया तो वो भी बहुत खुश हुये।

दूसरे दिन सुबह राजीव पेपर पढ़ते हुए कहे जा रहे थे “अरे अभी तक तैयार नहीं हुयीं, हम ऑलरेडी लेट हैं!” अचानक दोनों खिलखिला कर हंस पड़े। कई साल पहले की घटनायें दिमाग में तैर गयीं। अब जीवन संध्या में भी एक मकसद उनके पास था। एक दूसरे का हाथ थाम दोनों नयें उजाले की ओर बढ़ने लगे। जहां उनके टेलेन्ट की कद्र थी और सराहने वाले लोग भी। जीवन संध्या, जीवन साथी और बच्चों की सफलता, के साथ सुन्दर-सुहानी हो गयीं।

परमिशन

गली के मोड़ पर खोमचे वाला खड़ा था। दो-चार बच्चे वहां पानीपुरी और चाट खा रहे थे।

तभी पुलिस वाले आये और उसे डांटने लगे। “तूने परमीशन नहीं ली! कैसे दुकान सजा कर बैठा है? चल हटा यहां से नहीं तो थाने में बन्द कर देगे।”

“सहाब रोटी का सवाल है।” खोमचे वाला गिडगिडाने लगा।

दोनों पुलिस वालों नें भर पेट चाट खाई, पैक भी कराई और पांच सौ रूपय ले कर चले गये।

दूसरे दिन से बोर्ड और बेंच लगा कर वो चाट वाला कानूनन बैठने लगा।

कांच का मान

विलिमा के हाथ और तेज चलने लगे। बस ये आखिरी कॉपी भी लगे हाथ चेक हो जाये तो एक काम खत्म।

जल्दी-जल्दी करते हुये भी देर हो गई।सामने भीड़ देख उसे रोना आने लगा।गाड़ी तेज चलाने के बाद भी वो देर से घर पहुंची। घर में महफिल जमी हुई थी। उसकी छोटी नंद अपने कुनबे के साथ विराजी हुई थी।

उसे देख तुरन्त गले मिलीं, "भाभी आज तो जल्दी आ जातीं। "

"छोटी मुझे पता नहीं था तू आने वाली है। चल माफ कर।" कान पकडने का नाटक करते विलिमा बोली।

"ठीक है, पर खाना मेरी पसन्द का बनाओ।"

"ठीक है छोटी" प्यार से उसका गाल सहला,वो अपने कमरे मे आ गई।

थकान के मारे बुरा हाल था। पर किससे कहे, पीछे-पीछे पति भी आ गये। उसे लेटा देख बोले, "छोटी अपने परिवार के साथ बेंगलौर शिफ्ट हो रही है। फिर कब आना हो पता नहीं,इसलिये मिलने चली आई।" एक पल रूककर फिर बोले, "तुम ज्यादा थकी हो तो मैं रेस्तरां से खाना मगां लूं?"'

"नहीं, मैं खुद छोटी की पसन्द का खाना बनाऊंगी।" कहते हुये विलिमा बाथरूम में घुस गई। बाहर आई तो थकान का नामो-निशान भी नहीं था।

'ये घर मेरा है। यहां का मान-सम्मान बना कर रखना मेरे व्यवहार पर ही निर्भर करता है।' सोचते-सोचते दुगने उत्साह से वो काम में जुट गई।

खाना सबको बहुत पसन्द आया। सब लोग बैठ कर देर रात तक बातें करते रहे।

सुबह छोटी ने जाते वक्त एक पैकेट विलिमा के हाथों मे रख दिया, चौकते हुये विलिमा बोली, “ये क्या छोटी?”

“भाभी, कल आप स्कूल के काम से इतनी थकी हुईं थी फिर भी आपने मेरा मान रखने के लिये इतनी मेहनत की।

भाभी आप बहुत अच्छी हो। सदैव ऐसे ही प्यार करती रहना, ये छोटा सा उपहार मेरे और आपके नंदोई जी की तरफ सेआपको सप्रेम भेंट।”।

विलिमा की आंखे भर आई, ननंद को गले लगा कर बोली, “छोटी तुम्हारे भाई-भाभी का प्यार हमेशा ऐसे ही बना रहेगा। तुम जब चाहों यहां आ सकती हो।”

‘ससुराल में रिश्ते कांच जैसे होते है’, मां की कही बात विलिमा के मन में घूम रही थी।

प्यार और सम्मान सब मिलता है पर मेहनत से हासिल करना पड़ता है। कभी-कभी खुद की अनदेखी भी करनी पड़ती है।

साहस

किसी ने शीशे को ठक-ठक किया तो विशु ने देखा कोई कुछ पूछ रहा है। शीशी नीचे कर वो बात करने लगा।

होश आया तो वो बंधा हुआ था।उसके जैसे और भी लोग थे। वस्तुस्थिति से अवगत हो वो घबरा गया पर उसने हौसला बनाये रखा।

एक दिन मौका मिलने पर वो भाग निकला।

बाहर आया तो खुद को ऐसी जगह पाया जहाँ एक अपरिचित बोली ही चलती थी। बाद में पता चला की वो चैन्नई से कुछ किलोमीटर दूर था जहां तमिल चलती है।किसी तरह एक पति-पत्नी को अपनी परेशानी बताई।

उन लोगो नें पुलिस की मदद ली और उसे घर भेजा।

वो एक किडनी गिरोह में फंस गया था पर किस्मत से भाग निकला और बच गया।

आज फिर शीशे पर ठक-ठक सुन वो डर गया पर एक भयभीत लडकी को देख अपनी घटना याद आ गई।

“अंकल! हेल्प मी! ये गुंडे मेरा अपहरण करना चाहते है। बचा लीजिये।”

विशु नें पुलिस बुला ली। जीप बगल में आ कर रूकी तो लडकी की जान में जान आई। गुंड्डे पकडे गये। वो लडकी सकुशल घर पहुंच गई।

जागती आँखों के सपनें

“अम्मा देखना! एक दिन बहुत बडा आदमी बनूंगा। खूब पैसा होगा, सारे सपने पूरे होंगे।” चार साल का वितान जब ऐसी बातें करता तो लक्ष्मी हंस कर उसे सीने से चिपका लेती। ऐसे सपनें ले कर ही तो विवेक अरब देश गया था।

"तुम चिन्ता मत करो लक्षो" यही तो बुलाता था वो उसे ! “जब तक हमारा वितान बडा होगा, हम सब-कुछ हासिल कर लेंगे। बहुत पैसा होगा हमारे पास।”

साउदी जाने के बाद दो साल खूब पैसा भेजा फिर अचानक पैसा आना बन्द हो गया और फोन भी नहीं।

बहुत भटकी रोई - धोई पर कुछ पता नहीं चला। सरकारी आफिसर के अनुसार वों केवल अट्ठारह महीनें के वीजा पर गया था। उसे तो वापस आ जाना चाहिये था पर कुछ भी पता ना चला।

काफी प्रयास के बाद उसने विवेक की तलाश छोड़ दी और नौकरी तलाशनी शुरू की। उसे एक प्राइवेट फर्म में अच्छी नौकरी मिल गई और जीवन एक आस से बंधा गुजरने लगा। चार साल का वितान अब के.जी -टू में आ गया था। बहुत बोलता था।खूब सारी कहानियां सुनाता।जीवन में भारी कमी के बावजूद तरंगें थीं, रोमांच था। वितान की बातें उसे इस दुनियां के तनाव से निकाल कर दूसरी दुनियां में पहुंचा देतीं थीं और वो सारे जहान को भूल उस समय में केवल मां होती थी। समय बदलनें लगा, बदलता गया।

अब वितान कॉलेज पास कर के अपना काम कर रहा था। थोड़ी बहुत मुश्किल तो आई लेकिन वो हर मुश्किल को पार करके सफल होता गया। आज उसका विवाह है।

वितान सही था, वो कर्मठ भी था और सहीं रास्तों पर चल रहा था। जागी आँखों से देखें सारे सपनें पूरे हो गये पर विवेक का कुछ पता नहीं चला।वो आज भी गुमनाम हैं।

उद्दंडता

सर्दी की रातें, अंधेरा तेजी से फैल रहा है।

“अरी, जल्दी कदम बढा!”

“माँ, चल तो रही हूं”

“देखो अपना घर भी दीखे है”

दो मजबूत हाथों ने मुँह दबाय और पास लगे गन्ने के खेत में ले गये। सामने देवर अपने दोस्तों के साथ मौजुद था।

“ऐ रजुआ ये सब का है? तू हम पे गलत निगाह रखत है? भौजाई है हम!”

मुनिया को नशे की टॉफ़ी खिला कर सुला दिया गया। सारे रिश्ते तार-तार कर राजू घर जा के सो गया। आधी रात में होश आने पर रानी ने कपड़े पहने और बेटी को गोद में उठा घर पहुंची। घर में सब उसे ढूंढ रहे थे।
जब उसने अपने साथ घटी घटना बताई तो भीतर से देवर बाहर आ गया और सबके सामनें बोला, "छी भौजाई इतनी गन्दी नियत रखती हो।पता नहीं कहां मजे करके आ रही हो और मुझे इल्जाम दे रही हो!”

महत्व

“अरे! मौसी क्या बताऊं? समय ही नहीं मिलता।"

"बेटा, समय तो निकालना पड़ता है।”

तभी ज्योति के पति किसी काम से वापस आये। मौसी को देख चुप रह गये पर चेहरा बता रहा था की ज्योति से नाराज थे।

"ज्योति, मैं दो दिन रूकुगी। देखते हैं तुम्हारी क्या मदद हो सकती है।”

दूसरे दिन सुबह-सुबह ज्योति फोन में व्यस्त हो गई। मौसी ने राकेश का नाश्ता बना कर लंच भी पैक कर दिया। ज्योति सास-नंद, माँ-भाई सबसे बात करके जब रसोई में आई तब तक तो सारा काम हो चुका था। रसोई चकाचक पड़ी थी।

मौसी ने कहा, “हां, बच्चे तुम्हारी परेशानी, समय पर काम ना करना है। अब तुम कॉलेज की विद्यार्थी तो हो नहीं, खुद ही दिनचर्या बनानी है।”

"हां, मौसी” कह ज्योति मौसी के गले लग गई।

मौसी से ने आगे कहा, “दिनचर्या तो तुमने भी अपनी बनाई है।बस यह देखो की क्या फेर बदल करना है।समय तो जितना है उतना ही रहेगा, अपना समय किस चीज पर खर्च करना है इसका निर्णय तुम्हे लेना होगा।”

अपनी बात का प्रभाव पड़ता देख, सही वक्त पर सही बात घोल ज्योति को पिलाते हुए उन्होंने कहना जारी रखा, “इतना याद रखना जो रिश्ता सामने है, वो तार्किक रूप से उन रिश्तों से ज्यादा ध्यान और समय की आव्यशकता रखता है, जो की आँखों से ओझल हैं।”

दूसरे दिन से ज्योति में परिवर्तन दिखने लगा। परिणाम स्वरूप राकेश भी खुश नज़र आ रहा था।

आज चार साल बाद मौसी की तस्वीर को माला पहनाते हुये ज्योति की नम आँखे सच्चे मन से उन्हें श्रद्धांजली दे रही थी। अपने तीन साल के बेटे के साथ अब वो घर भी बखूबी सम्हाल रही है और घर से पार्टटाईम काम करके कमा भी रही है।

पुरानी हवेली

सामने खड़ी सूनी हवेली आज भी अपने वैभव के दिनों की याद दिला रही थी। यहीं इसी आहते में बचपन बीता, शहनाई बजी।पिता नें लोहे की फैक्ट्री दोनों बेटों को सौंप दी और सेवानिवृति का आनन्द लेने लगे।

अब कुछ जमाने का चलन, कुछ बचपना। भाईयों में वैमनस्य होने लगा। एक बार कपड़ा फट जाये तो सिलाई दिखने लगती है। आखिर हवेली बेच दोनों को बराबर हिस्सा बांट, पिता पुश्तैनी गांव में चले गये।

आज वो पिता की जगह है और बेटे उनकी जगह। दर्द चेहरे पर कुछ ओर लकीरे छोड गया।

“पापा, आप यहां इस वीरान हवेली में बैठे क्या सोच रहे हो?” बढ़े बेटे ने उन्हें हिलाया।

बड़े गौर से देख कर वे बोले, “छोटे तुम भी आओ ... “ आगे जारी रखते हुए उन्होंने कहा, “देखो बच्चों मैं और मेरे भाई के बीच इस हवेली के लिये झगडा हुआ। नतीजतन पिता ने इसे बेच दिया और पैसा बराबर बांट दिया। जिसने खरीदा वो भी नहीं रहता। ये बस कबूतर और जंगली जीवों का घर हे।

“यदि तुम साथ रहोगे तो भी दो पुश्तों बाद वो जगह वीरान या किसी दूसरे की हो जायेगी और अलग होगे तो भी तुम्हारे बाद किसी ओर की होगी। हाथ जुडते है, तो प्यार सम्मान फैलता है। अलग-अलग होते है तो उठा हाथ नफरत फैलाता है। तुम दोनों समझदार हो।”

दोनों भाई गले मिले और एक ही नींव पर अलग-अलग लेकिन साथ बने रहने के लिये एकमत हो गये।

नवरात्रि

शादी तो तय हो गई पर दिन पर दिन असमंजस बरकरार है। एक तो दिन नहीं बन रहा। शुभ मुहूर्त नहीं है। तरीका खोजा गया। पंडित जी ने सुझाया नवरात्री में विवाह करवा लो। सभी दिन शुभ है। सप्तमी को शादी होना तय हुई। केवल छः दिन बाद शादी।

'शादी जिन्दगी का बहुत बड़ा सपना होती है, कितनी सारी तैयारीयां करनी पड़ती है, कैसे क्या होगा?' सोच-सोच कर परेशानी बढ़ती जा रही थी। अचानक बधाई देने एक मित्र आये और बोले ठेके पर व्यवस्थायें हो जायेंगी। होटल में सारी बुकिंग कर दो। मैंनें उनके साथ जा कर कुछ घन्टों में सारी बुकिंग कर ली।

अब मैं मानसिक रूप से बहुत हल्का महसूस कर रही थी। पहले का समय तो है नहीं, रिश्तेदार आ कर सभी तैयारी करवा देते थे।आज कल रिश्तेदार ही मेहमान बन कर आतें हैं और हर चीज में मानमेख निकालतें हैं।

खैर शादी का दिन आ गया। धूमधाम से बारात दरवाजे पर थी पर अपशकुन होने लगा।जिन लोगोे को जलन हो रही थी वो अपने असली रूप में आ चुके थे। कोई कह रहा जबरदस्ती की शादी है, नवरात्र शुभ है पर शादी नहीं होती। कोई कुछ ज्ञान परोस रहा था।कुल मिला कर माहौल वैसे ही तनातनी का था।

अचानक किसी ने रिवाल्वर निकाल कर हवाई फायर किया पर बदकिस्मती से गोली लड़के के पिता को लग गई।जहां थोड़ी देर पहलें खुशनुमा माहौल था अब मातम छाया था।

सारे क्रियाकर्म पूरे कर के लगभग बीस दिन बाद मेरे होने वाले पति मेरे घर आये और बोले, "जो हुआ उसे बदला नहीं जा सकता।तुम्हारी जिन्दगीं भी बर्बाद हो जायेंगी। मैं तुमसे अब भी शादी करना चाहता हूं।मुझे मालुम है तुम्हें मनहूस का दर्जा इस समाज से मिल चुका है पर मैं यह सब नहीं मानता।निर्णय तुम्हारा होगा। मुझे तुम्हारे फैसले का इन्तजार रहेगा।"

घर वाले तो जैसे बौरा ही गये। आनन फानन में चन्द लोगों की उपस्थिति में हमारा विवाह समपन्न हुआ।उनके घर में सारी औपचारिकतायें पूरी की गई पर

बिना उत्साह। मैं श्रीमती विवेक गुप्ता बन आस्ट्रेलिया आ गई। मेरे पति बहुत अच्छे और सुलझी तबीयत के समझदार इन्सान हैं।

विवेक मेरे हमसफर है भी हैं और इससे भी बढ़कर वे एक बेहद संवेदनशील पति और पिता है। मैं बहुत खुशनसीब हूं कि विवेक मेरे पति है। मेरी बगिया के दो नन्हें फूल काम्या और कियान से हमारी बगिया गुलजार रहती है पर मन पर पड़ा वो घाव आज भी ताजा है।कुछ लोगों की उद्दण्ड़ता का खामियाजा समाज को किस-किस रूप में चुकाना पड़ता है। यदि विवेक समझदार ना होते तो मेरी जिन्दगीं ना जाने किन अंधेरी कालकोठरियों में गुजर रही होती।

अप्रत्याशित

“पापा कमरा खाली है। इतनी सुबह दादा दादी कहां गये? मुझसे बिना मिले।”

“बेटा वो लोग तुम्हारी बुआ के घर गये है। कुछ दिनों में आ जायेगे।”

इत्तेफाक से उसी दिन स्कूल की तरफ से वृद्धाश्रम जा कर, बच्चों को वृद्धों के जीवन और रहन-सहन के बारे में जानने की शिक्षा लेने के लिये गए। नौ साल के अवीश के लिये ये पहला मौका था,जब वो इस प्रकार वृद्धो से मिल रहा था।

अचानक एक कमरे में कुछ देख वो चीख कर भागा और दादा-दादी के गले लग रोने लगा।

“पापा-मम्मी ने झूठ बोलाा था कि आप लोग बुआ के पास गये हो!”

बादलों में से निकली कडकती बिजली में खून के रिश्ते तार-तार दिख रहे थे।

चुनौती

“तुम मुझसे ऐसे बात कैसे कर सकते हो? पत्नी हूं तुम्हारी और वो भी तुम्हारे बराबर पढी हुई।”

“पर मैं अफसर हू और तुम केवल लेक्चरर।”

“हां, मौका नहीं मिला पर आज मुझे स्वीकार्य है आपकी चुनौति पर मैं भी एक कसम उठाती हूं, जब तक सफल नहीं होऊंगी तब तक घर वापस नहीं आऊंगी।”

“कहां रहोगी?”

“पी जी में” कह कर गीतिका, अनिरूद्ध का घर छोड़ कर परिचित परिवार में पेइंगगेस्ट बन कर रहने लगी। गर्भकाल के तीन महिने पूरे हो चुके थे और सर पर परिक्षाये थी। वो पति अनिरूद्ध की चुनौति स्वीकार कर आई.ए.एस की परिक्षा की तैयारी कर रही थी।

लगातार पढाई और ऊपर से गर्भावस्था। पर वो हारने वालों में नहीं थी।आखिरी पेपर के बाद चला इन्टरव्यू का सिलसिला और वो ट्रेनी आई.एफ.एस अफसर की पहली सीढी पर चढ ही गई।

दर्द से कराहती गीतिका अनिरूद्ध को अपने समक्ष पा हैरान रह गई।

“तुम जीत गईं” कह कर अनिरूद्ध नें उसका माथा चूम लिया।

ऑपरेशन से बेटा पैदा हुआ। एक साथ दो चुनौतियां पूरी कर गीतिका बेहद खुश थी।अनिरूद्ध खुद उसे घर ले कर गये। छह महीने बाद जब उसे ट्रेनिंग पर जाना था तो अनिरूद्ध और बेटा उसे छोडने रेल्वे स्टेशन तक आये थे।बाद में फीजी में पोस्टिंग होने पर वो अकेली ही गई। पति अनिरूद्ध एस.पी दिल्ली में नियुक्त थे।

“कहां खोई हो मैडम?” अनिरूद्ध की आवाज सुन गीतिका मुस्कुरा कर रह गई। अनिरूद्ध और सात साल का कयान उसे लेने एयरपोर्ट आये थे। आँखों ही आँखों में वोअपना संघर्ष और चुनौति दुबारा जी गई।।

बदला

“नहीं भाई, मुझे कोई क्यों नुकसान पहुँचायेगा। मेरी ना तो किसी से दुश्मनी है,ना मैं लडती-झगडती हूं।”

“हां, बहन पर जमाना खराब है। इसलिये मैं चाहता हूं तुम समय पर लौट आओ।”

“नहीं भाई ! मैं इस गाँव में कई बार जा चुकी हूं। गाँव के लोग बहुत ही अच्छे है और फिर मेरे साथ बीस लोग है ना। वहां बेरोजगारी से रोज़ नए जुर्म पनप रहे हैं।हम गांव वालों को जीविका के नये साधन बताने जा रहे है। उन लोगों के लिए यह बहुत ही जरुरी है।”

सुमि की लाश पर फूट-फूट कर रोता राघव उस क्षण को कोस रहा था जब उसने सुमि को अकेले जाने दिया।

ग्राम प्रधान के अय्याश बेटे नें वापस लौटती सुमि को अगवा कर लिया और नग्न जिस्म रेल की पटरियों पर फेंक दिया।

धू-धू कर जलती चिता। सुमि का यूं अचानक चले जाना राघव बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था।

आज जब पटरियों पर उन पांचों आरोपियों के कटे-जले शव मिले जो मासूम सुमि के गुनाहगार थे तो लोगो को बहुत खुशी हुई। हत्या किसने की कोई सबूत नहीं था पर राघव ने समर्पण कर दिया।

अफ़सोस

बहुत भरोसे से विकुल ने सुजय को फोन मिलाया। मीटिंग में व्यस्त सुजय झल्ला कर बोला, “काम के समय व्यवधान मुझे पसन्द नहीं है। जरूरी काम है तो बोलो। ”

“नहीं !” कह कर विकुल मोबाईल बन्द कर, सोफे पर बैठ डाक्टर की कही बातें सोचने लगी।

यदि आपरेशन कराओगी तो भी चांस पचास प्रतिशत ही है और वैसे दवाई वगैरह् लेकर खुद का ध्यान रखोगी तो भी उतना जी लोगी।

विकुल ने अपनी और सुजय की स्वीटजरलैंड की टिकटे बुक की।शाम को जब सुजय वापस आये तो उसने वो टिकट उन्हें दिखाई और साथ चलने की गुजारिश की। हमेशा की तरह् केवल उपेक्षा ही उसके हिस्से में आई पर इस बार वो ठान चुकी थी तिल-तिल कर नहीं मरना।

पति की टिकट कैंसल करके अपनी तैयारी करने लगी। विकुल अकेले ही घूमने चली गई। वापस आई तो सब वैसा ही। सुजय उसमें इतने बदलाव देख खुश भी थे और अचम्भित भी। विकुल ने कई क्लब ज्वाईन कर लिये और स्वयं सेवा संगठन संस्था बनाई जो गरीब बेसहारा लोगो की मदद करती है।

आज स्वयं सेवा संगठन के श्रेष्ठ काम करने के लिये राष्ट्रपति से पुरस्कार की घोषणा हुई है और तवियत खराब होने से वो अस्पताल में भर्ती है।सुजय ने डाक्टर से बात की तो विकुल की बीमारी का पता चला।

गहरी वेदना से अपनी अवहेलना उन्हें दंश मार रही थी। विकुल सब समेट जा चुकी थी

बजरा

शाम का समय वैसे भी थोड़ा उदासी भरा होता है और आज तो वैसे भी बजरा मायूस, घबराई, परेशान सी थी।

कैसे बताये? किसे बताये? ये बात बताने की है या नहीं? बेचारी बेहद उलझन में थी। जब कुछ समझ नहीं आया तो जाकर नदी के किनारे, रेतीले टीले पर बैठ गई। बहता पानी देख मन को बहुत सकुन महसूस हो रहा था।

तभी उधर से ताई जी का गुजरना हुआ। अकेले, नदी किनारे, सोच में डूबी बजरा को देख वे उसके पास आ बैठीं और बालो में हाथ फिरा कर पूछी "बजरा काहे चिन्ता में डूबी हो? पढाई-बढाई कैसी चल रही है?"

बजरा ने अपनी बडी-बडी आंखे ताई के चेहरे पर टिका दी, फिर थकी सी आवाज मे बोली "ताई कछु कहवे है। का तुम सुनियो?"

"हां, हां बोल बिटबा"

"ताई मास्साब हमसे गंदा काम करे है। ताई घर में हम अकेले औरत जात है। मां तो यादऊं नहीं हमें। बाबू ही पाले है। ताई स्कूल में सबके जाने के बाद मास्साब हम पढाई में कमजोर है कह कर रोक लय। फिर चपरासी को कोनऊं काम से बाहर भेज दिये। फिर वो हमारे साथ वो सब किये।"

ताई अनुभवी महिला थीं, सब समझ गईं। बोली, "तुम्हें मास्टर कैसा लगता है? व्याह करोगी वासे?"

ताई बजरा को सब समझा कर चलीं गईं। म.प्र.का पिछला ग्रामीण इलाका। एक सरकारी हाई-स्कूल, 25 बच्चे, एक अध्यापक। एक सप्ताह बाद मास्टर ने बजरा को फिर रोक लिया। चपरासी को बाहर भेज दिया और फिर वही लूट-खसोट।

योजनानुसार बजरा ने पहली क्लास के पुवु को ताई के पास भेज दिया।मास्टर रंगे हाथ पकड़ा गया। उसने गांव वालों से बहुत माफी मांगी पर गांव वाले विवाह से कम पर तैयार ना थे।

सरकारी नौकरी पक्की होने वाली थी ऐसे में ये कांड सब बर्बाद कर देता। आखिर मास्टर जी ने समझदारी का परिचय दिया और अपने माता-पिता को बुला कर सारे हालात समझाये। मरता क्या ना करता, बजरा के साथ विवाह करते हुये मास्टर सोच रहा था, 'गल्ती गले की फांसी बन गई...'

ई सी जी

"क्या पापा? आप कब तक शीशे के पार उस मशीन को घूरते रहोगे?"

"तू बैठ बेटा। मैं देख रहा हूं।"

"जीवन के रास्ते में कितने उतार चढाव आते है और तब घबराकर हम चाहते है रस्ते सीधे मिलते जाये।आज जब जिन्दगीं सीधी सादी है तो मैं चाहता हूं कि इस मशीन पर कोई सीधी लाईन ना आये।" आँसू को बहने से रोक कर सौरभ बोले।

"पापा आप आराम कर लो। जब से मम्मी को दिल का दौरा पडा है आप लगातार तनावग्रस्त हो।" लहरा कर गिरे सुदीप को उनके बेटे ने बांहों में थाम लिया। जोर से चिल्लाया। नर्स, डाक्टर सब भाग कर आ गये।

अब कमरे में दो मरीज थे और दो मशीन जो धडकन दिखा रही थी।

बाहर से सुदीप बार-बार मशीन की रेखा देख रहा था।

व्यक्तित्व दर्पण

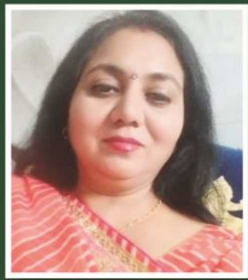

नाम - नमिता दुबे

जन्म - 24 नवम्बर 1970, आगरा।

शिक्षा - एम.ए. समाजशास्त्र

पता - नमिता दुबे, फ्लैट नं. 1009, टॉवर म 11 सेक्टर, नोएडा (यु.पी.) 201305

ई मेल - namitaavnishdubey@yahoo.com

मो. - 9700850016

प्रकाशन - प्रथम प्रकाशन

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-19-2

मूल्य- 55/-